नेतृत्व कर्ता द्वारा विद्यार्थी प्रतिभा पहचान : एक महत्वपूर्ण चुनौती पर
एक मॉड्यूल

National Centre for School Leadership

विद्यालय नेतृत्व अकादमी
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, हरियाणा
गुरुग्राम – 122001
School Leadership Academy
***State Council of Educational Research & Training, Haryana,*Gurugram**

122001

नेतृत्व कर्ता द्वारा विद्यार्थी प्रतिभा पहचान एक महत्वपूर्ण चुनौती

पुष्पा शर्मा *

प्रस्तावना

बच्चे की प्रतिभा की पहचान नेतृत्व कर्त्ता शिक्षक की एक गुरूतर जिम्मेदारी है। इस जिम्मेदारी के सफलतापूर्वक निर्वहन हेतु ये आवश्यक है कि सर्वप्रथम यही जाना जाए कि प्रतिभा क्या होती है? बच्चों के किस गुण को हम प्रतिभा का नाम दे सकते है?

किसी भी विषय को अधिक बेहतर समझने की बुद्धि को प्रतिभा कह सकते है। यह एक प्रखर मानसिक दर्शन–शक्ति है, जिसका उपयोग सृजनात्मक व रचनात्मक कार्यो में लक्षित होता है। यह एक वैचारिक दृष्टिकोण, उद्देश्यात्मक सोच व बुद्धिमता के उच्च स्तर के आंकलन करने की इकाई है।

प्रतिभा कोई आधुनिक व नया शब्द नहीं है बल्कि इस शब्द का प्रयोग मानव सभ्यता के उद्‌गम के समय से ही होने के प्रमाण हैं। प्राचीन ग्रन्थो में भी इसका उल्लेख है और निरन्तर सम् सामयिक परिप्रेक्ष्य में इसका वर्णन व उपयोग होता रहा है। महान साहित्यकार मुंशी प्रेमचन्द ने भी एक जगह पर लिखा है कि "जिस में पुरूषार्थ है, प्रतिभा है। वह आज नही ंतो कल अवश्य ही धनवान हो कर रहेगा।"

सही अर्थो में सामान्य व विशिष्ट बौद्धिक स्तर दोनों के समावेश से ही एक प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व का निर्माण होता है जिस से प्रतिभाशाली व्यक्ति सामान्य कार्यो को सफलता पूर्वक करने के साथ ही किसी विशेष क्षेत्र में विलक्षणता के साथ कोई कार्य करता है और उस विलक्षण प्रतिभा के बल पर उस कार्य में अपना श्रेष्ठतम देता है।

प्रतिभा को हम मानसिक, बौद्धिक व वैचारिक भी कह सकते हैं जैसे शारीरिक सौष्ठव वाला व्यक्ति दाव पेच व जोर आज माईश वाले वाले काम करने में

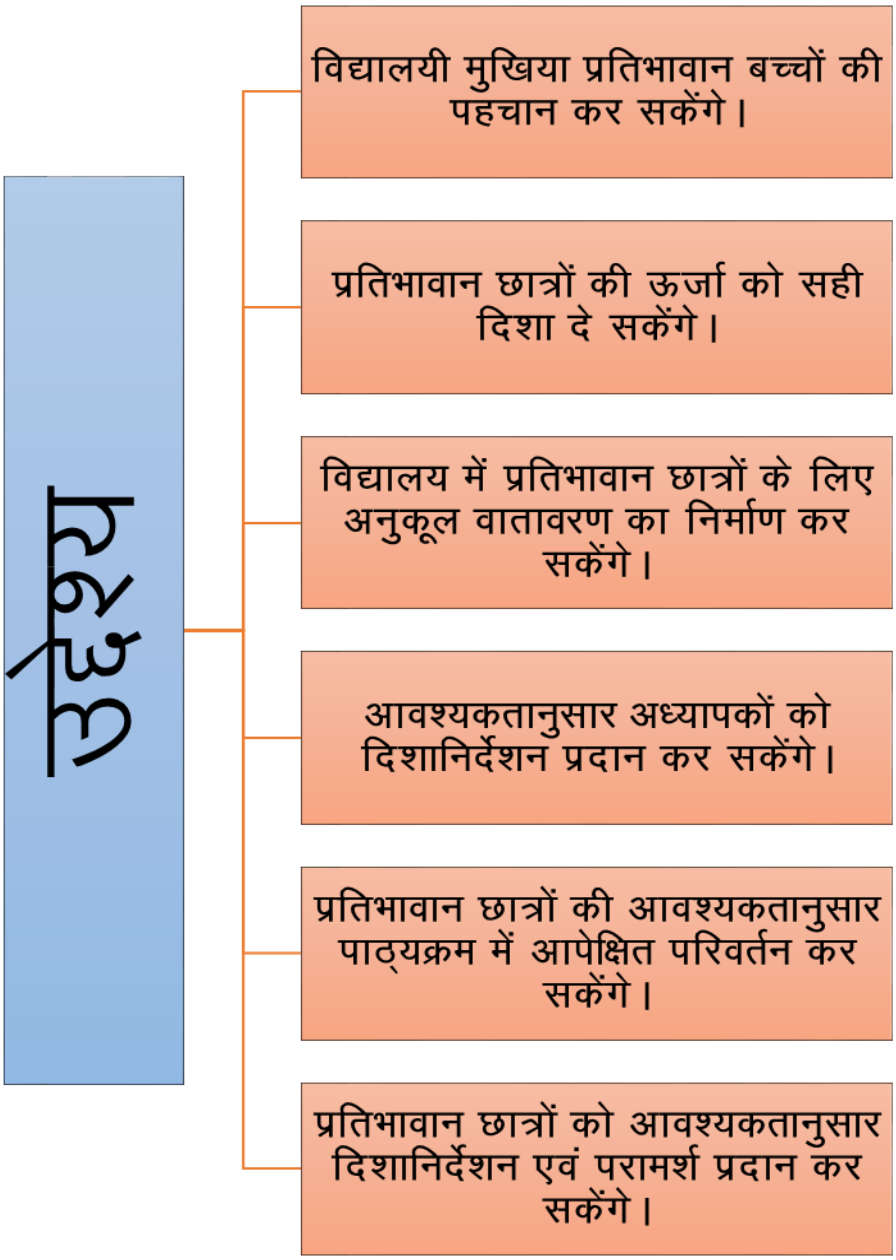

निपुण हो सकता है इसी प्रकार वैचारिक व बौद्धिक विलक्षणता व तीव्रता के बल पर वह शिक्षण कला व शोध इत्यादि कार्यो में अप्रत्याशित सफलता प्राप्त कर सकता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि बच्चों में प्रतिभा जन्मजात होती है या वातावरण से पैदा होती है? इस सम्बन्ध में विद्यानों, विचारकों के भिन्न–भिन्न मत हैं। एक पक्ष की मान्यता यह है कि प्रतिभा जन्मजात होती है, यह प्राकृतिक उपहार है जो

बच्चों को जन्म के साथ ही उपकृत होती है। कई/कुछ विद्वानों का यह मत है कि प्रतिभा वातावरण व परिवेश में शिक्षण प्रशिक्षण तथा अभ्यास से भी प्राप्त की जा सकती है। परन्तु एक वैचारिक मत यह भी है कि प्रतिभा जो जन्म जात होती है उसे प्रशिक्षण व अभ्यास से और निखारा जा सकता है और यदि इसी प्राकृतिक व जन्मजात प्रतिभा को उचित वातावरण में समुचित शिक्षण, प्रशिक्षण, अनुभव व अभ्यास का अवसर न मिले, तो यही प्रतिभा कुंठित होकर व्यर्थ व नाकार भी हो सकती है। हमारा मत भी इसी विचारधारा से मेल खाता है।

यह एक सर्वभौतिक सत्य है कि प्रत्येक बच्चे में कोई न कोई गुण जिसे संदर्भित 'प्रतिभा' कह सकते हैं, होता है।

यह अलग बात है हर एक बच्चे

प्रतिभावान छात्रों की पहचान विधियाँ

(i) बुद्धि परिक्षण- प्रतिभावान बालकों की पहचान के लिए अध्यापक विभिन्न प्रकार के बुद्धि परिक्षणो या परीक्षाओ का प्रयोग कर सकता है। ये बुद्धि-परीक्षायें अध्यापक व्यक्तिगत तौर पर या समूहों मे प्रयोग कर सकता है। इन परीक्षणों के लिए अध्यापकों का प्रशिक्षण अति आवश्यक है।

(ii) उपलब्धि परीक्षाएँ- बुद्धि परीक्षाओ के अतिरिक्त बालकों को उपलब्धि परीक्षाओ द्वारा भी प्रतिभावान बालकों की श्रेणी के लिए पहचाना जा सकता है। इस प्रकार की परीक्षाओ मे विद्यार्थियों की उपलब्धियों का ज्ञान भली-भाँति हो जाता है। उच्च स्तर की उपलब्धि बालकों के प्रतिभावान होने की आशा जागृत करती है।

(iii) अभिरूचि परीक्षाएँ- अभिरूचि से विद्यार्थियों की भविष्य की सफलता के बारे में अनुमान लगाया जा सकता है। क्योंकि अभिरूचिया किसी एक विशेष योग्यता से सम्बन्धित होती है। बुद्धि परीक्षाओं की तरह अभिरूचि परीक्षायें भी होती है। इन परीक्षणों के लिए भी अध्यापक का प्रशिक्षण अति आवश्यक है।

(iv) सम्बन्धित व्यक्तियों से सूचनाएँ- प्रतिभावान बालकों के व्यक्तित्व के बारे मे अध्यापक अन्य व्यक्तियों से भी सूचनायें एकत्रित कर सकता है। बुद्धि आदि के अतिरिक्त यदि अध्यापक अन्य गति विधियों में बालको की प्रतिभा का अनुमान लगाना चाहता है तो वह प्रतियोगितायें आदि करवा कर उनकी अन्य योग्यताओं में वरिष्ठता का अनुमान लगाकर प्रतिभावान बालक की खोज कर सकता है। सम्बन्धित व्यक्तियों से अध्यापक विद्यार्थियों की रूचियो का ज्ञान भी प्राप्त कर सकता है और उनकी रूचियों कें अनुसार अपने शिक्षण कार्य में आवश्यक परिवर्तन एवं सुधार ला सकता है।

(v) व्यवहार एवं गतिविधियों का निरीक्षण एवं अवलोकन– अध्यापक छात्रों के दूसरे के साथ व्यवहार एवं दैनिक गतिविधियों का निरीक्षण कर भी उनकी प्रतिभाओं की पहचान कर सकता है। इसके लिए अध्यापक या मुखिया को इन छात्रों की विशेषताओं की जानकारी होना अनिवार्य है।

का बौद्धिक स्तर समान नहीं होताः यानि हर बच्चे का बौद्धिक स्तर जिसे बुद्धि लब्धि या अंग्रेजी में Intelligence Quotient (IQ) भी कहा जाता है, अलग–अलग होता है। बच्चों के बौद्धिक स्तर या लब्धि का आंकलन एक मानवीकृत व आनुपातिक तुलना के आधार पर किया जाता है जो, समान परिस्थितियों में रहने वाले समान बच्चों के बीच की जाती है।

बालको (बच्चों) के बीच की जाती है। लब्धियों के ऐसे बहुत से उदाहरण मिल जाते हैं, जो कई बार चर्चा का विषय भी बन जाते हैं जैसे कौटिल्य नाम के बच्चे को बहुत से लोग जानते होंगे। वह अपनी विलक्षण एवम् तीक्षण बौद्धिक लब्धि का परिचय देता हुआ सूचना व प्रसार तन्त्र में छाया हुआ है। इसी प्रकार 10–11 वर्ष की एक ऐसी बालिका भी है जो अपनी प्रतिभा एवम् अभ्यास के बल पर विभिन्न प्रकार की विदेशी भाषाओं में बड़ी दक्षता से सम्बोधन करने में प्रवीणता हासिल कर चुकी है। पिछले दिनों टी.वी. पर मात्र दो वर्ष का एक बच्चा बड़े ही सहज रूप से संसार के कई देशों के नाम, उनकी राजधानी व अन्य कई सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर दे रहा था, जिन्हे याद करना एक बड़े बच्चे या विद्यार्थी के लिए कतई भी सरल नहीं है। अतः यह कथन बिल्कुल सत्य है कि सभी बच्चों की प्रतिभा एक समान नहीं होती है।

प्रतिभा की एक विशेषता यह भी है कि यह असीमित नहीं होती यानि किसी ना किसी बिन्दू, लाइन या स्तर पर यह भी सीमित हो जाती है। तो भी इसको विकसित होने के लिए उचित वातावरण व अवसर का होना आवश्यक है।

बच्चा चाहे कितनी ही विलक्षण प्रतिभा का धनी हो, उचित प्लेट फार्म के बिना वह अपनी योग्यता व प्रतिभा को सिद्ध नहीं कर सकता। अतः प्रतिभा का आंकलन अन्य सभी कारको के परिप्रेक्ष्य में ही होना चाहिए। ये कारक अनगिनत हैं मुख्य रूप से ये वातावरण, अवसर, शिक्षण, अनुभव, प्रशिक्षण, धैर्य व जिज्ञासा आदि हो सकते हैं।

अतः प्रतिभा को हम एक वह नैसर्गिक वरदान मान सकते हैं जिसे उचित प्रशिक्षण व अनुभव से निखारा जा सकता है, जिसके आधार पर बच्चा विशेष क्षेत्रों में अन्य सामान्य बच्चों की अपेक्षा बेहतर प्रदर्शन करते हुए अपना श्रेष्ठतम दे सकता है।

प्रतिभा की पहचान एक आवश्यकता

पूर्व मुख्यान्यायधीश माननीय वी.के. कृष्णा अय्यर ने बच्चों के प्रति सामाजिक दायित्व की महत्ता पर बल देते हुए कहा था कि यदि हम बच्चे के विकास की उपेक्षा करते हैं तो हम उसे बेसहारा छोड़ने की गलती करने के दोषी होंगे।

स्पष्ट है कि परिवार, समाज व राष्ट्र के प्रत्येक सदस्य व नागरिक का यह दायित्व है कि वह बच्चे के विकास में अपेक्षित योगदान दें। यह दायित्व सभी का है। किसी भी रूप में इसकी अपेक्षात्व अवहेलना स्वीकार्य नहीं हो सकती है।

इस संदर्भ में बच्चे के विकास का दायित्व शिक्षक का होता है, जिसके कन्धों पर नेतृत्व का भार लदा होता है। अतः यह अति आवश्यक है कि नेतृत्व कर्त्ता शिक्षक हर अवस्था में बच्चे के सर्वांगीण विकास का होना सुनिश्चित करें।

बच्चे के विकास हेतु शिक्षण कार्य के सामानन्तर नेतृत्व कर्त्ता को बच्चे की विलक्षण बौद्धिक लब्धि यानि प्रतिभा की पहचान करके, उसके निखार व संवृद्धि हेतु समुचित वातावरण तैयार करने व इसके लिए निरन्तर प्रयास करते रहने की जिम्मेदारी का भी निर्वहन करने की आवश्यकता होती है।

प्रश्न उठता है कि प्रतिभा की पहचान क्यों करनी चाहिए? इसकी क्या आवश्यकता है?

हम इस संदर्भ में निम्न बिन्दुवार कारण मान कर चल सकते हैं :–

1. बच्चे के सर्वांगीण विकास हेतु शिक्षण के साथ–साथ अन्य पाठयेत्तर गतिविधियां भी आवश्यक हेाती हैं जैसे खेल, नाटक, संगीत, राष्ट्रीय सेवा येाजना (NSS) राष्ट्रीय कैडेट कोर इत्यादि। ये सामान्यतः स्वैच्छिक व

जन सेवार्थ गतिविधियां होती हैं। अतः विद्यार्थियों। बच्चों द्वारा इनमे सहभागिता उनकी रूचि व इच्छा के आधार पर होती हैं। अपनी रूचि व इच्छा के कारण ही वे अच्छा प्रदर्शन करते हें। जो विद्यार्थी की प्रतिभा का एक मापदण्ड होता है। अतः बच्चा किस गतिविधि में रूचि रखता है। इसकी पहचान करना आवश्यक हो जाता है ताकि बच्चे की रूचि के अनुसार उसे उसी गतिविधि में डाला जाए जहाँ वो अपनी प्रतिभा का श्रेष्ठतम् प्रदर्शन कर सके।

2. यदि प्रतिभा पहचान उचित प्रकार से हो जाए तो बच्चे को उस गतिविधि में जाने से रोका जा सकता है जिसमें उसकी रूचि नहीं है। यदि बच्चे को जबर–दस्ती वह कार्य करने को विवश किया जायेगा तो वह अपनी प्रतिभा का उचित प्रयोग ही नहीं कर सकेगा। बल्कि वह कुंठा व तनाव का भी शिकार हो सकता है।
3. नेतृत्व कर्त्ता को बच्चे के साथ उसके बौद्धिक स्तर के आधार पर व्यवहार करना होता है तभी शिक्षण कार्य में वांछित सफलता मिल सकती है। एक अल्पबुद्धि बच्चे के साथ व्यवहार करने के लिए शिक्षक को उसके बौद्धिक स्तर को ध्यान में रखना होता है। इसलिए बच्चों के सर्वांगीण व समुचित विकास हेतु शिक्षक के लिए उनकी प्रतिभा की पहचान करना अति आवश्यक हो जाता है ताकि वह बच्चों के साथ कार्य का निर्वहन करते समय यथोचित व्यवहार कर सके।
4. जैसे एक नियोक्त अपने कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिलवाता है ताकि वह उनकी क्षमता का पूर्ण लाभ ले सके, परन्तु यहाँ उसे पहले यह निर्णय भी लेना पड़ता है कि अमूक कर्मचारी, अमुक प्रशिक्षण में बेहतर ढंग से व शीघ्र प्रशिक्षित हो सकेगा और प्रशिक्षण के पश्चात् वह नियोक्ता को पूरा लाभ भी कमा कर देने की स्थिति में होगा। ऐसे में नियोक्ता को उचित

कर्मचारी का चयन कर प्रशिक्षित करना होता है और उसके लिए ऐसा चयन करते समय यह पहचानना आवश्यक है कि वह कर्मचारी पूर्णतः प्रशिक्षित होकर लाभ देने की प्रतिभा रखता है या नहीं। यहाँ हम नियोक्ता के स्थान पर विद्यालय के मुखिया को रख कर यह कल्पना कर सकते हैं कि उसके लिए भी उसी प्रकार बच्चे की प्रतिभा पहचान करना, उतना ही महत्त्वपूर्ण है ताकि शिक्षक बच्चे से उसका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करवाने की स्थिति में हो सके।

5. क्योंकि सभी बच्चे सभी कार्यों को एक समान दक्षता के साथ नहीं कर सकते हें। प्रायः यह देखने में आता है कि कोई कार्य किसी बच्चे के लिए अत्यधिक उबाऊ व नीरस होता है वहीं दूसरे बच्चे को वह रूचिकर व आकर्षक लगता है। दूसरे बच्चे के लिए स्थिति विपरीत हो सकती है। दूसरे बच्चे का पहले बच्चे को नीरस लगने वाला कार्य रूचिकर लग सकता है और आकर्षक कार्य उसे अरूचिकर लग सकता है। देखने वाली बात यह है कि

प्रतिभावान छात्रों की विशेषताएँ

1. इन छात्रों के परिणाम औसत से अधिक होते हैं
2. इन छात्रों की उपलब्धियाँ अन्य छात्रों से अधिक होती है।
3. वाक पटुता इनका एक महत्त्वपूर्ण गुण है।
4. इनकी भाषा स्पष्ट एवं प्रभावशाली होती है।
5. इन छात्रों में आत्मविश्वास होता है।
6. इनका शब्द ज्ञान विस्तृत होता है।
7. ये मौलिक चिन्तन कर सकते हैं।
8. पूछे गए प्रश्नों का उत्तर शीघ्रता से देने की प्रवृति होती है।
9. अपने से अधिक उम्र वाले छात्रों से दोस्ती करना पसंद करते हैं।
10. अपने विचारों में स्पष्ट होते हैं।
11. इनका बौद्धिक लब्धि सत्र 110 से अधिक होता है।
12. इनकी स्मरण शक्ति उच्च स्तर की होती है।
13. इनमें से कुछ छात्र शरारती और अति सक्रिय (hyper active) होते हैं।
14. इन छात्रों में समूह का नेतृत्व करने की इच्छा एवं क्षमता होती है।
15. ये छात्र अन्य छात्रों की अपेक्षा शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक रूप से जल्दी विकास करते है। छात्रों की रुचि एवं योग्यता अनुसार अध्यापक आगे की योजना तैयार कर सकता है।

काम वहीं है परन्तु उन्हें करने वाले दो बच्चों की रूचियां व मानसिकता भिन्न हैं।

अतः नेतृत्वकर्त्ता शिक्षक के लिए आवश्यक है कि वह अपनी समझ बूझ से बच्चों के समुचित विकास के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए उनका उचित मार्ग चुन सकें और शिक्षक द्वारा यह कार्य बच्चों की प्रतिभा की पहचान किए बिना हो सकेगा। ऐसा संभव नहीं है।

जिस प्रकार पौधों को लगाने के लिए, कौन से पौधे को कब और कैसी मिट्टी, खाद, हवा, पानी की आवश्यकता होती है उसे माली को जानना आवश्यक है क्योंकि इसके बिना पौधे फल फूल नहीं सकेंगे। बच्चों की भी वही स्थिति होती है। उनको भी फलने फूलने व विकसित होने के लिए एक शिक्षक को उनकी रूचि, क्षमता, दक्षता के अनुसार निर्णय लेने की आवश्यकता होती है यानि बच्चों के विकास के लिए किस दिशा में क्या कदम उठाए जाने चाहिए, उसके लिए शिक्षक को बच्चों की प्रतिभा की पहचान करना अति आवश्यक है।

प्रतिभा पहचान कैसे हो?

विद्यार्थी प्रतिभा की पहचान करना मुखिया के महत्त्वपूर्ण कार्यों में से एक है। यहाँ यह कहना भी अतिश्योक्ति नहीं होगा कि यह सबसे महत्वपूर्ण कार्य होने की वजह से नेतृत्व कर्त्ता के सामने एक बड़ी चुनौती है जिस के कारक व कारण निम्न हो सकते हें।

1. वर्तमान शिक्षा रोजगारोन्मुखी नहीं है फिर भी बच्चों, विद्यार्थियों के मन में पूरी तरह से यह बात बिठा दी जाती है कि शिक्षित होने पर वे रोजगार प्राप्त कर लेंगे। परन्तु विद्यालयी शिक्षा उपरांत भी छात्र को रोजगार प्राप्ति के लिए कई पडावों से गुजरना पडता है।
2. शिक्षा व शिक्षण का उद्देश्य विद्यार्थी का पूर्ण विकास करके उसे इस स्तर का शिक्षित व प्रवीण बनाना है ताकि वह अपनी प्रतिभा के बल पर ही

रोजगार योग्य हो सके।

3. व्यावहारिकता व प्रयोगात्मकता के अभाव में शिक्षा प्रभावी व फलदायक नहीं बन पा रही है।
4. बच्चों की नव ज्ञान जिज्ञासा व उत्सुकता को भांप कर उसे रूचिकर साधनों से सार्थक परिणामों की दिशा में जाएं, शिक्षण संस्थाओं में ऐसे शिक्षकों की बहुत कमी है।
5. शोध कार्य एक महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र है, परन्तु या तो शिक्षक और शिक्षक संस्थाएं इस बारे में अनमिज्ञ हैं या वे इसे असम्भव व अनावश्यक विषय वस्तु मान कर, इस पर विचार ही नहीं करते या फिर वे समय व संसाधनों के अभाव में इसे कर ही नहीं पाते।
6. शिक्षा को रूचिकर, प्रयोगात्मक, व्यावहारिक, उद्देश्य परक बनाने के लिए न तो शिक्षक इतने शिक्षित होते हैं और ना ही शिक्षण संस्थाओं के पास इस के लिए प्रर्याप्त कोष (बजट) होता है।
7. शिक्षा को केवल नौकरी का साधन समझने की भूल के कारण सीखने सिखाने की इच्छा, भावना व दायित्व का मात्र औपचारिकता वश ही निर्वहन किया जा रहा है।
8. शिक्षकों की गैर शिक्षण कार्यों में जिम्मेदारी व व्यस्तता उनके द्वारा प्रतिभा पहचान जैसे कार्यों के लिए किए जाने वाले प्रयासो में बड़ी बाधा है।
9. संस्थाओं में रिक्त पद भी एक बड़ा कारण/अड़चन है।

उपरोक्त कारण नेतृत्वकर्ता के कर्त्तव्य पालन में सामान्य रूकावटे व व्यवधान हैं जिस कारण बच्चे शिक्षा द्वारा पूर्ण विकसित होने के अपने अधिकार से वंचित हो रहे हैं।

अतः नेतृत्वकर्ता शिक्षक को सभी व्यवधानों व रूकावटों से पार पाना एक बड़ी चुनौती है। "बच्चे को उसके अधिकारों से वंचित करना न केवल अपराध है बल्कि समाज व राष्ट्र को इन प्रतिमाओं से वंचित करना एक सामाजिक व राष्ट्रीय क्षति है।"

कैसे हो प्रतिभा की पहचान;

केस संख्या 1

वैसे तो यह बात दशकों पुरानी है और राजकीय हाई स्कूल के एक विद्यार्थी की आपबीती घटना है, परन्तु यह घटना आज भी प्रासंगिक है यह घटना दर्शाती है कि कितनी हैरानी वाली बात है कि शिक्षक ताउम्र ये नहीं जान सकता कि बच्चे को जो सीखना चाहिए, शिक्षक उसे वह सीखाने में सक्षम है भी या नहीं और शिक्षक जो बच्चे को वास्तव में सिखा रहा है। या सिखाने हेतु जो ढंग अपना रहा है, उससे वह बच्चा कुछ सीख भी पाएगा या नहीं और यदि बच्चा ककुछ सीख भी गया तो उस समय उस टीचर द्वारा पढ़ाया (रटाया) गय वह जीवन पर्यन्त बच्चे के लिए कुछ सार्थकता या महत्व रखेगा या नहीं । वर्ष 1970, एक सरकारी हाई स्कूल का नौंवी कक्षा का प्रतिभाशाली, मौलिक चिन्तन का धनी, अत्यन्त जिज्ञासु प्रवृति का छात्र, नाम बी. सिंह के साथ हुआ घटनाक्रम.....

उन दिनों, विद्यालयों के कमरों में प्रायः दीवारों पर जमीन से 2 से 2) फुट ऊपर तक काला पेंट कर दिया जाता था। शायद छात्र दीवारें मैली व गन्दीन कर दे, इसलिए...

छरहरा बदन, लम्बी कद काठी, रौबदार मूंछे, कुल मिलाकर एक कड़क पुलिस वाले का सा व्यक्तित्व, सभी अध्यापकों में सबसे अधिक खौफ पैदा करने वाले शिक्षक थे श्री एन. सिंह। खौफ इसलिए कहना पड़ रहा है कि स्कूल में विद्यार्थी व शिक्षक के बीच विश्वास, स्नेह व सहयोग, जो छात्र की प्रतिभा की पहचान और व्यक्तित्व निखार के लिए होना चाहिए, वहाँ शून्य या बल्कि उसकी जगह छात्रों के मन में शिक्षक का भय और खौफ ही होता था। एन. सिंह बेशक मेहनती और ईमानदार शिक्षक थे, परन्तु बच्चों के प्रति उनके व्यवहार को और उनके पढ़ाने के ढंग को लेश मात्र भी ऐसा नहीं कहा सकता था कि कोई विद्यार्थी उनको अपना पथ प्रदर्शक या आदर्श मान सके । हाँ । घण्टी बजी तो शिक्षक के आने में शायद कुछ देर थी । कक्षा नीचे टाट पर बैठे–बैठे चाक से दीवार के काले वाले भाग पर एक पगड़ी बांधे मानव का चित्र बनाने में लीन था। जिसका प्रमाण था कि छात्र में पाठ्यक्रम के इतर भी कोई प्रतिभा थी, जिसे यदि आज भी उस परिप्रेक्ष्य में परखा जाए तो इसे चित्रकारी का उत्तम प्रयास कहा जा सकता है।

एन. सिंह कक्षा में दाखिल हुए बी. सिंह तो अपनी अदाकारी में मस्त था और क्योंकि उसका मुंह दीवार की ओर था। इसलिए उसको शिक्षक के आने का पता तभी चला, जब कक्षा का शोरगुल बन्द हो गया और बच्चे एन. सिंह के स्वागत में खड़े हो गए थे। सम्भावित आक्रोश भरे तुफान के कारण बी. सिंह डरा सहमा, सभी बच्चों के बाद में सावधान खड़ा हो गया। एन. सिंह की गुस्से से भरी आंखे, खूंखार शेर की आंखों की तरह बहुत ही भयानक लग रही थी। स्वाभाविक ही था। विद्यार्थी पूरी रोचक, प्रेरक तथा मनोबल बढ़ाने वाली कहानियां, प्रसंग आदि सुनाई जानी चाहिए।

1. कोई सामाजिक कार्य व शैक्षिक भ्रमण जिस में बच्चे की पूर्ण भागीदारी हो।
2. महान लोगों की जीवनियों में वे प्रसंग सुनाए जा सकते हैं जिनमें यह अवश्य वर्णन हो कि उन्होंने कैसे विषम परिस्थितियों को पार करते हुए सफलता प्राप्त की है।
3. प्रार्थनासभा में मंच पर विभिन्न गतिविधियां करवाई जा सकती हैं।

प्रतिभाशाली बच्चे की प्रत्येक वस्तु, परिस्थिति, जीव व मानव इत्यादि से कुछ असीमित व अवास्तविक। काल्पनिक आशाएं होती हैं। और इस प्रकार का बच्चा सभी चीजों के साथ अपने ही ढंग से व्यवहार करता है। ऐसे में शिक्षक को अति संयम व सूक्ष्म दृष्टि से बच्चे की गतिविधियों व व्यवहार को ध्यान में रखते हुए ही उसमें छिपी प्रतिभा पहचानने का श्रम करना चाहिए।

कक्षा के लगने पर, एक प्रतापी शिक्षक के सम्मान में खड़ा न होकर स्कूल की दीवार गन्दी करने का दुस्साहस कैसे कर सकता था।

''खड़ा हो जा'' एन. सिंह ने कड़क आवाज में कहा और चित्रकारी की तरफ देखकर पूछा; ''यो तेरा बाबू बणाया सै के (हरियाणा भाषा में)– (ये तेरा बाप बनाया है क्या) बी. सिंह डर से सहमा हुआ कुछ कहने की हिम्मत नहीं कर सका और फिर टीचर का एक्शन शुरू हुआ, उसने बी. सिंह के हाथों पर तड़ातड़ छह बैंत जड़ दिए और चाक से बनाए भित्ती चित्र को मिटाने का फरमान दे डाला। बी. सिंह को वह मिटाना ही पड़ा और वह भी डण्डों की मार से हाथों में असहनीय दर्द के होते हुए।

- नेतृत्व कर्ता शिक्षक को छात्रों के परीणामों की जाँच व्यक्तिगत तौर पर करनी चाहिए। मुखिया प्रतिभावान छात्रों को उनके अच्छे परीणाम आने पर व्यक्तिगत तौर पर बधाई देते हुए उन्हें प्रोत्साहित करें। प्रतिभावान छात्रों के लिए समय–समय पर प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाएँ।
- मौका मिलते ही छात्रों की प्रतिभा की सराहना विद्यालय मुखिया द्वारा की जानी चाहिए।
- विद्यालय के कार्यालय द्वार पर प्रतिभावान छात्रों की सूची बड़े अक्षरों में लगाई जानी चाहिए।
- समय–समय पर प्रतिभावान छात्रों के अभिभावकों को भी सम्मानित किया जाना चाहिए। इससे छात्रों को ओर अच्छा करने का प्रोत्साहन मिलता है।
- विद्यालय के प्रतिभावान छात्रों को कुछ जिम्मेदारी पूर्ण कार्य सौंपे जाने चाहिए जिससे उनके साथ–साथ अन्य छात्रों में भी अच्छा करने की प्रतियोगी भावना जागृत हो।
- प्रतिभावान छात्रों के अध्यापकों की भी प्रशंसा समय–समय पर की जानी चाहिए।
- किसी विशेष उपलब्धी के बाद इन छात्रों को विशेष अवसर पर अन्य छात्रों, अध्यापकों एवं महमानों के समक्ष अपनी भावनाएँ मौखिक रूप से प्रस्तुत करने का अवसर दिया जाना चाहिए। साथ ही इनकी भावना एवं उपलब्धियों को किसी पत्रिका, समाचार पत्र एवं सोशल मीडिया पर स्थान दिया जाना चाहिए।
- विद्यालय मुखिया को इन छात्रों के साथ समय मिलने पर अनौपचारिक वार्तालाप का अवसर देना चाहिए जिससे इन छात्रों में ओर अधिक अच्छा करने का जोश बना रहें।

- विद्यालय में आए मुख्य अतिथियों से इन छात्रों को मिलने का मौका अवश्य दिया जाए और इन्हें यह महसूस कराया जाए कि ये विद्यालय का एक अहम हिस्सा है।
- प्रतिभाशाली बच्चों की पहचान करने के प्रयोजन से नेतृत्व कर्ता शिक्षक को उसकी बौद्धक क्षमताओं को पहचानना होता है। यह देखना आवश्यक है कि बच्चा परिवार में जिन मूल्यों और संस्कारों को सहज भाव से सीखता जाता है वह ऐसी सहजता से स्कूल में क्यों नहीं सीख सकता।
- शिक्षक के लिए शिक्षण केवल नौकरी ही नहीं बल्कि कक्षा में उसे वातावरण पैदा करना होता है जहाँ बच्चे को परिवार की तरह ही सहजता से अपनी जिज्ञासाओं व उत्सुकताओं का सन्तोषजनक उत्तर प्राप्त हो सके... प्रतिभाशाली बच्चों में जिज्ञासा व उत्सुकता की प्रवृति सामान्य बच्चों की अपेक्षा भिन्न होती है। इसके लिए शिक्षक को विशेष प्रयास व व्यवस्था करनी पड़ती है। जैसेः– शिक्षक की प्रकृति व आयाम बच्चे की प्रतिभानुसार होनी चाहिए यानि..... प्रतिभाशाली बच्चों के साथ सामान्य बच्चों के समकक्ष व्यवहार नहीं कर सकते क्योंकि ..... प्रत्येक बच्चे की प्रतिभा अलग होती है जैसे एक छात्र जिसमें एक कलाकार (गायक, चित्रकार) इत्यादि की प्रतिभा हो उसे इंजीनियर डाक्टर बनाने की गलती नहीं कर सकते।
- जबरदस्ती से चुने हुए विषय या कार्यक्षेत्र को बच्चा बोझ समझ कर ढोने को विवश हो जाता है ऐसे में बच्चा अपनी लग्न व तन्यमयता से कार्य नहीं कर सकता जिससे वह पूर्णतः सफल हो सकता हो। परिणामस्वरूप वह कुंठित होकर निराशा का शिकार हो जाता है। नेतृत्व कर्ता शिक्षक को यह पहचान अवश्य होनी चाहिए कि नटखट चंचल, हास्य पूर्ण, शरारती व अति उत्साही बच्चे की ऐसी हरकतों में जिज्ञासा व प्रतिभा छुपी होती है, जो सामान्य बच्चों में नहीं मिलती। शिक्षक के लिए बच्चे में छुपी हुई किसी प्रतिभा को

पहचान कर तदानुरूप व्यवहार करना अति आवश्यक है।

- अनगढ़ पत्थर देखने में भारी व कुरूप हो सकता है, परन्तु एक मूर्तिकार उसे तराश कर कोई आकर्षक मूर्ति बना सकता है। जिस मूर्ति को मूर्तिकार ने पत्थर में छिपी सुन्दर मूर्ति की सम्भावनाओं में देखा व पहचाना, ऐसे बच्चा भी अनगढ़ मिट्टी होता है। शिक्षक एक मूर्तिकार की कल्पना की भांति बच्चे में छिपी प्रतिभा को पहचान कर उसे सही दिशा प्रदान करे। प्रतिभाशाली बच्चे के असामान्य व्यवहार के कारण उसे नाकारा, नालायक कह कर चुप नहीं करा सकते। शिक्षक उसको पहचान कर उसकी बुद्धि व कौशल को विकसित होने देने वाला वातावरण प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
- प्रतिभाशाली बच्चे पाठ्यक्रम को सामान्य बच्चों की अपेक्षा जल्दी समझ लेते हैं, ऐसे में बचे हुए समय का उपयोग अन्य सृजनात्मक कार्यों में करना चाहिए, जिसमें बच्चे की रूचि व प्रतिभा लक्षित होती है। जिसका शिक्षक को भी बोध हो।
- प्रतिभा पहचान के लिए इन क्रियाकलापों व गतिविधियों में से कुछ को अपनाया जा सकता है जैसेः– गायन; चित्रकारी; अभिनय; कागज की अल्पना; मिट्टी के खिलौने व घरोदे इत्यादि बनवाना, पार्कों का विकास; पार्कों में फूल, पत्तियों द्वारा रंग विन्यास करना; उन पर गीत, कविता आदि लिखना, पेड–पौधे; जीव जन्तु के बारे में लिखना, यात्रा वृत्तांत सुनाना, लिखना, आत्मकथा लिखना, प्रकृति के सौन्दर्य की घटनाएं सुनाना, अपने अनुभवों के रोचक व रोमांचक प्रसंग इत्यादि बुलवाना व लिखवाना, अधूरे चित्रों को पूरा करना, इन डोर व आऊट डोर गेम व खेल इत्यादि करवाने।

केस संख्या (2)

वही विद्यार्थी, वही कक्षा, वही शिक्षक अंग्रेजी पढ़ाने की जिम्मेदारी उनकी थी। क्योंकि उन दिनों अंग्रज़ी की क्लास उन्हीं शिक्षक को मिलती थी जो एन. सिंह जैसे व्यक्तित्व और कृतित्व का स्वामी हो उन दिनों यह माना जाता था कि सर्वाधिक शारीरिक दण्ड देने वाला शिक्षक ही अंगेजी अच्छे ढंग से पढ़ा सकता है और इसलिए सामान्यताः ऐसे ही शिक्षकों को अंग्रेजी विषय पढ़ाने को दिया जाता था चाहे अंग्रेजी शिक्षक को स्वयं ही विषय का पूरा ज्ञान ना हो।

अंग्रेजी व्याकरण (English Grammar) में काल (Tense) के नियमों का बड़ा महत्व होता है। उन दिनों हिन्दी से अंग्रेजी अनुवाद (Translation) पर अत्यधिक बल दिया जात था और उसके लिए ज्मदेमे और अनुवादों में उनके प्रयोग करने के सूत्र रटाए जाते थे।

शिक्षक N. Singh ने एक वाक्य बोला, 'माली एक घंटे से पौधों को पानी दे रहा है। और पूछा कि 1. कौन सा काल है (Tense) 2. क्या नियम फार्मूले (verb) का कौन सा रूप लगेगा। 3. और सब के बाद इस वाक्य की इंगलिश बनाओ यानि इस वाक्य का अंग्रेजी में अनुवाद करो।

B. Singh ने अपने आश्चर्यजनक अन्तः बुद्धि का प्रमाण देते हुए कहा, श्रीमान जी! मुझे यह तो नहीं पता ये कौन काल है और इसमें क्या क्या नियम सूत्र लगेंगे, परन्तु मैं इसकी इंगलिश अवश्य बना सकता हूँ। यानि अनुवाद के लिए सूत्र/नियम सिखाए जा रहे थे। B. Singh ने उनकी आवश्यकता न समझते हुए सीधे अनुवाद बताने की बात कह दी।

N. Singh को उस बच्चे का अप्रत्याशित उत्तर सुनकर थोड़ा आश्चर्य तो हुआ, परन्तु फिर भी उसने B. Singh को पूरी कक्षा के सामने लज्जित करने के भाव से चुनौती पूर्ण शब्दों में कहा।

''रै यो देखो! कित का अंग्रेज आया सै। अगले नै टैंसा का बेरा ए कोनी, आर अंग्रेजी बणा देगा यो'' फिर B. Singh की ओर मुखातिब होकर बोले। ''अच्छा बणा अंग्रेजी, हम भी देखां टैंसा बिना क्यूकर बणा वैगा। (अरे Tense की जानकारी बिना कैसे अनुवाद करेगा)

अच्छा बणा अंग्रेजी, हम भी देखते हैं। N. Singh अंग्रेजी पढ़ाने और ळतंउउंत के इसी एकमात्र ढंग से लगातार पढ़ाते रहे हैं। स्वयं भी शायद ऐसे ही पढ़े, सीखे थे और अब अन्य बच्चों को भी यही तरीका बता रहे हैं यानि नीरस रूप से रट्टा लगवा रहे थे।

B. Singh ने पूरे आत्मविश्वास के, बिना हिचकिचाहट, बिना किसी त्रुटि के अनुवाद कर दिया।

N. Singh ने चुनौतीपूर्ण भाषा इसलिए प्रयोग की कि उन्हें इस बात का कतई एहसास नहीं था कि कोई ग्रामीण पृष्ठभूमि का लड़का बिना टैंस और Grammar के नियम जाने भी हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद कर सकता है।

विस्मित से N. Singh बजाए B. Singh की प्रशंसा करते, शाबासी देते अपनी मिटाने के लिए कहा हाँ, हाँ ठीक सै। पर Tense भी याद होने चाहिए और ठण्ैपदही के पिछवाड़े पर एक डण्डा भी जड़ दिया। यह डण्डा शाबाशी या इनाम या स्थापित परिपाटी से हट कर किया प्रयास का फल। डण्डा शायद इसलिए लगाया होगा कि B. Singh ने लाईन/लकीर से हट कर अपनी असाधारण प्रतिभा प्रदर्शन की कोशिश क्यों की? क्योंकि उन्हें ऐसे प्रयास कतई स्वीकार्य नहीं थे।

प्रश्न कई हैं। ''क्यों'' का उत्तर आज तक नहीं मिला। हाँ, कहाँ और कैसे का उत्तर है, जिसे लागू करने की दरकार आज भी है, बल्कि उस वक्त से भी ज्यादा है।

B. Singh एक प्रतिभाशाली विद्यार्थी था किसी भी पाठ को आसानी से सीखना, किसी प्रश्न का उत्तर शीघ्रता शीघ्र देने की कोशिश करना व बौद्धिक क्रियाओं में श्रेष्ठता और तीव्रता का प्रदर्शन करने जैसे विलक्षण गुण जो एक प्रतिभा शाली छात्र में होते हैं वे B. Singh में थे। परन्तु फिर कमी कहाँ रही और उसे कैसे पूरा किया जा सकता था ?

कमी वही रही कि शिक्षक को इस बात का इल्म नहीं था कि पाठ्यक्रम में प्राप्तांकों के इतर कोई और बुद्धि कौशल नाम की भी प्रतिभा हो सकती है। क्या ऐसी प्रतिभा का भी कोई मूल्य है? क्या उसको पहचाना जाना आवश्यक है?

ाँ'' उत्तर है ''हाँ''। प्रतिभा पहचानने के साथ–साथ उसको निखारने व पल्लवित होने देने की बड़ी जिम्मेदारी है शिक्षक की। N. Singh इस से चूके और चूकते चले गए और B. Singh जैसी जाने और भी कितनी प्रतिभाओं का गला घोटा गया होगा, कितने ही ऐसे प्रतिभाशाली छात्रों का विकास अवरूद्ध हुआ होगा और देश को इन प्रतिभाओं से वंचित होना पड़ा होगा।

- नेतृत्व कर्ता एक पथ प्रदर्शक होता है अतः बच्चों के प्रति उसका व्यवहार मित्रवत, सहयोगात्मक, प्रेरक, प्रोत्साहन वर्धक होना चाहिए । बच्चों को

उपसंहार

बच्चा ईश्वर की अमूल्य भेंट है। उसका लालन–पालन, स्वास्थ्य, शिक्षा और सम्पूर्ण विकास उसका जन्म सिद्ध अधिकार है। इन अधिकारों को सुनिश्चित करना हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है, जिसका निर्वहन करना बच्चे के जन्म से ही या यूं भी कह सकते हैं कि उसके गर्भ के समय से ही, करना आवश्यक होता है। समय और अवस्थानुसार जिम्मेदारी का स्वरूप भी बदलता रहता है। शैशव या बाल्यकाल अवस्था बहुत ही महत्वपूर्ण होती है। इसे बच्चे के सम्पूर्ण विकास में नींव के रूप में समझा जाना चाहिए।

जिस प्रकार किसी भवन की मजबूती पूर्णता नींव की मजबूती पर निर्भर करती है। उसी प्रकार बच्चे के विकास का आयाम उसकी बाल्याकाल की अवस्था में हुए लालनपालन, स्वास्थ्य, शिक्षा इत्यादि की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। इस अवस्था में जिम्मेदारियों का सर्वाधिक भार नेतृत्वकर्ता शिक्षक के कन्धों पर अध्यापक के बराबर ही होता है वही एक ऐसी इकाई है जो एक चित्रकार, मूर्तिकार व कलाकार सब कुछ है जो बच्चे के कोमल मानस पटल पर अपनी कौशल व योग्यता से एक सुन्दर चित्रकारी कर सकता है। बालरूपी गीली व अनगढ़ मिट्टी को एक सुन्दर मूर्ति में ढाल सकता है जो बच्चे के समुचित विकास के लिए महत्वपूर्ण व आवश्यक होती है यानि नेतृत्व कर्ता न केवल एक प्रबन्धक है बल्कि वह वो शिक्षक है जो बच्चों के लिए एक सहयोगी, सलाहाकार, पथ प्रदर्शक, उपदेशक है।

हर बच्चे में कोई न कोई प्रतिभा अवश्य होती है। कुछ तो अति विलक्षण प्रतिभा के साथ जन्म लेते हैं। नेतृत्व कर्ता शिक्षक का काम है, बच्चे की प्रतिभा पहचानना व उसको निखार कर विकसित होने का वातावरण उपलब्ध करवाना।

ये सभी बच्चे के सम्पूर्ण विकास के लिए अति आवश्यक है क्योंकि बच्चा स्वयं अपनी प्रतिभा को पहचानने में दक्ष नहीं होता। अतः यह भारी जिम्मेदारी नेतृत्व कर्ता एवं अध्यापक के कन्धों पर आती है।

जैसा कि हमने देखा कि प्रतिभा पहचान कोई सरल व साधारण कार्य नहीं। इसके लिए शिक्षक को विशेष प्रयासों से विशेष प्रावधान करने के साथ–साथ अपनी बुद्धि और कौशल का प्रयोग करते हुए बच्चे का नेतृत्व करते रहना होता है ताकि उसके विकास को उचित दिशा व दशा मिल सके।

प्रतिभाशाली बच्चों का नेतृत्व करना, शिक्षक के लिए कोई बच्चों का खेल नहीं है यह एक महान जिम्मेदारी है, जिसका निर्वहन में शिक्षक की ओर से कोई कसर, असावधानी के लिए कोई स्थान नहीं है। तथापि नेतृत्वकर्ता को विभिन्न प्रकार की व्यवस्था परक व अन्य व्यवधानों का सामना करना पड़ता है जिनका वर्णन पूर्व में किया गया है। ये रूकावटें बहुत बड़ी है और एक नेतृत्वकर्ता को चुनौती के रूप में उनसे पार पाना होता है। बच्चे के सर्वांगीण विकास हेतु यह आवश्यक है कि नेतृत्वकर्ता शिक्षक को शिक्षण के अतिरिक्त बच्चों की विलक्षण बौद्धिक लब्धि यानि प्रतिभा की पहचान करने, उसकी संवृद्धि व निखार हेतु समुचित वातावरण सुनिश्चित करने की दिशा में निरन्तर प्रयास करने में सहयोग दे।

शिक्षक व शिशु मनोविज्ञान, बुद्धि परीक्षण, शिक्षण व प्रशिक्षण पद्धति आदि अति महत्वपूर्ण विषय है जिन पर शोध होना चाहिए जिससे शिक्षण का मूल उद्देश्य प्राप्त करने में कुछ सफलता हासिल हो सके। इस विषय पर समय–समय पर अध्यापकों एंव विद्यालय मुखिया के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।

भिन्न प्रकार की रूकावटे नेतृत्वकर्ता के लिए कदम–दर–कदम पेश होने वाली चुनौती है। ये रूकावटें छोटी नहीं है तथापि ये नेतृत्वकर्ता के सामने आने वाले वो व्यवधान है जिनको चुनौती के रूप में लेकर, साध कर उनसे पार पाना होता

है।

नेतृत्वकर्ता को बच्चों की उन प्रतिमाओं को पहचानना पड़ता है जो प्रायः अव्यक्त व छुपी हुई होती हैं क्योंकि बच्चों के विकास की दिशा व दशा तो प्रतिमाओं की इसी पहचान से तय होती हैं।

नेतृत्वकर्ता को अपने इस दायित्व के निर्वहन की शुरूआत बच्चों में प्रतिमाओं की सम्भावनाओं को तलाश करने जैसा होता है। जिसे तर्क संगत नेतृत्व अपनी सोच से आगे बढा कर उस छिपी प्रतिमा की पहचान पर समाप्त करता है।

नेतृत्व कर्त्ता द्वारा सम्भावित प्रतिमा की खोज को चुनौती के रूप में स्वीकारना व उन्हे पल्लवित होने के लिए उवर्रक जमीन तैयार करना एक पुनीत कार्य है। और यह कहना भी अतिश्योक्ति नहीं होगा कि सही अर्थो में यही वास्तविक नेतृत्व है। और उत्कृष्ट शिक्षण है।

संदर्भ सूची

निर्माणकर्त्ता
पुष्पा शर्मा

स्वरूपण एवं संपादन
डॉ. रजनी कुमारी
परामर्षदाता, SLA
SCERT, Haryana